E-ISSN: 2706-8927
P-ISSN: 2706-8919
www.allstudyjournal.com
IJAAS 2020; 2(3): 615-618
Received: 05-06-2020
Accepted: 29-06-2020

मधु चौधरी
शोधकत्री, उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान मानित विश्वविद्यालय, गाँधी विद्या मन्दिर, सरदारशहर, राजस्थान, भारत

डॉ. रमा शर्मा
व्याख्याता, बुनियादी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय (सीटीई), गांधी विद्या मंदिर, सरदारशहर, राजस्थान, भारत

Corresponding Author:
मधु चौधरी
शोधकत्री, उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान मानित विश्वविद्यालय, गाँधी विद्या मन्दिर, सरदारशहर, राजस्थान, भारत

उच्च माध्यमिक विद्यालयों में नवनियुक्त एवं अनुभवी शिक्षकों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन।

मधु चौधरी एवं डॉ. रमा शर्मा

शोध सारांशः-
नवनियुक्त शिक्षक जब शिक्षण व्यवसाय में प्रविष्ट होते हैं, तो उनमें एक नई ऊर्जा, नया जोश, कार्य के प्रति उत्साह व ललक होती है, जो उनकी अभिवृत्ति से परिलक्षित होती है। चूंकि नवनियुक्त शिक्षक अनुभवहीन होते हैं, जो उनकी शिक्षण कला की आंशिक कमजोरी को प्रदर्शित करता है। वास्तव में इन नवीन शिक्षकों की इस स्थिति की तरफ ध्यान दिया जाये कि अच्छी व्यावसायिक अभिवृत्ति होने पर भी नवीन शिक्षक शिक्षण के क्षेत्र में अनुभवी शिक्षकों से आगे क्यों नहीं निकल पाये, तो इसका एक बड़ा कारण यही बताया जा सकता है, कि अब तक इन नवीन शिक्षकों ने मात्र सैद्धान्तिक व पुस्तकीय ज्ञान ही प्राप्त किया है। चाहे बी. एड. पाठ्यक्रम के दौरान हो या विभिन्न प्रतियोगिता परीक्षा के दौरान उन सभी कौशलों, ज्ञान व क्रियाओं का प्रत्यक्ष अनुभव नहीं हो पाता, जिन्हें वह शिक्षक बनने के बाद प्रयुक्त कर अपने विद्यार्थियों में निहित क्षमताओं का अनुकरण कर सकेगा। शोधकर्त्रा द्वारा किया गया यह अध्ययन वास्तविक सर्वेक्षण पर आधारित होने के कारण सत्य अनुभवों को प्रकट करता है, जो शिक्षाविदों व सरकार के समक्ष कुछ ज्वलंत समस्याओं व उनके संभावित सुझावों को प्रकट कर शिक्षा जगत में वांछित परिवर्तन की मांग रखता है।

शब्द कूंजी:- अभिवृत्ति, शिक्षण व्यवसाय,नवनियुक्त शिक्षक, अनुभवी शिक्षक

प्रस्तावना -

शिक्षा बालक, समाज, राज्य, राष्ट्र व विश्व सभी का निर्माण करती है। शिक्षा समाज के निर्माण से लेकर समाज के सभी प्रकार के कार्यक्रमों में व क्रियाओं में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। शिक्षा द्वारा तभी सकारात्मक परिणाम प्राप्त किये जा सकते है, जब शिक्षा प्रदान करने वाला व्यक्तित्व अर्थात् शिक्षक योग्य, ज्ञानी, शिक्षण कार्य के प्रति पूर्ण निष्ठावान तथा समर्पित हो। श्रीमती एस. पी. सुखिया ने बताया शिक्षक ही राष्ट्रीय एवं भौगोलिक सीमाओं को लांघकर विश्व व्यवस्था तथा मानव जाति को उन्नति के पथ पर अग्रसर करता है। अतः यह कहा जा सकता है, कि मानव समाज एवं देश की उन्नति उत्तम शिक्षकों पर ही निर्भर है। भारतीय शिक्षा आयोग (1964 & 66) उन सभी कारकों में से जो शिक्षा की गुणवत्ता को प्रभावित करते हैं, तथा राष्ट्रीय विकास में योगदान देते हैं, अध्यापक का गुण, सामर्थ्य तथा चरित्र निःसंदेह सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण है। शिक्षकों की समाज में महत्त्वपूर्ण भूमिका को कोई नकार नही सकता है। वर्तमान में ज्ञान-विज्ञान व तकनीकी के दौर में शिक्षक द्वारा अपनी इस महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह सफलतापूर्वक तभी किया जा सकता है, जब वह स्वयं इसके लिए अभियोग्य हो, क्योंकि यदि अध्यापक में ही शिक्षण अभियोग्यता नही होगी तो वह अपने विद्यार्थियों की योग्यता का विकास भला कैसे कर पायेगा? रवीन्द्रनाथ टैगोर ने कहा था - सिखाए वही जो सीखना कभी बंद ना करे।

वर्तमान समय में शिक्षा प्रसार हेतु आयोजित विभिन्न सरकारी योजनाओं के फलस्वरूप विद्यालयों में छात्रों की संख्या में हो रही निरन्तर वृद्धि के अनुपात में अध्यापन कार्य में भी गुणात्मक वृद्धि करने की आवश्यकता है। विद्यार्थियों की विभिन्न जिज्ञासाओं को शान्त करने, उनकी समस्याओं का समाधान करते हुए उनकी नैसर्गिक योग्यता का विकास करने के लिए शिक्षण को प्रभावी बनाना महत्त्वपूर्ण है। शिक्षकों से शिक्षा के क्षेत्र में बढ़ती मांगों व चुनौतियों का सामना करने के लिए अपनी बेहतर तैयारी व आयोजनाओं के उपयोग की आशा की जाती है, अध्यापक केवल विद्यार्थियों को शिक्षण प्रदान करके ही अपने दायित्व से मुक्त नही हो जाता, वरन् उसका उत्तरदायित्व तो इतना अधिक महत्त्वपूर्ण है, कि वह प्रत्येक व्यक्ति को पूर्णता तक ले जा सकता है। अतः कोई भी व्यक्ति अध्यापक की महानता की बराबरी नहीं कर सकता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) में भी इसी बात को स्वीकार करते हुए कहा कि

– No people can rise above the level of the teacher. अतः शिक्षण व्यवसाय शिक्षकों से एक स्वस्थ व निश्चित लक्ष्य, पूर्ण अभियोग्यता, कुशल नेतृत्व क्षमता तथा निश्चित रूप से अपने व्यवसाय के प्रति पूर्णतया सकारात्मक अभिवृत्ति की मांग करता है। जो अध्यापक अपने कार्यो को महत्त्व देते है, अध्यापन में रूचि रखते हैं तथा जिन्हे अपने विषय की समसामयिक जानकारी होती है, ऐसे अध्यापक अधिक प्रभावशाली तथा अपने व्यवसाय के प्रति गंभीर होते है। अतः शिक्षकों में इसके लिए विभिन्न प्रभावशाली शिक्षण विधियों, कोमल व कठोर शिल्प उपागमों का नवाचारों के रूप में प्रभावी प्रयोग करने के साथ-साथ यह जरूरी है कि शिक्षक अपने विषयी ज्ञान को निरन्तर बढ़ाते रहें तथा अपने सामान्य ज्ञान को भी अद्यतन बनाने का प्रयास करें।

इससे स्पष्ट है कि शिक्षकों के पास एक चुनौतीपूर्ण व्यवसाय है, तथा केवल वे शिक्षक ही इस भारी उत्तरदायित्व को अपने कंधों पर उठा सकते है, जो इसके लिए वास्तव में तैयार (योग्य) है, जिनमें सशक्त नेतृत्व व्यवहार तथा शिक्षण व्यवसाय के प्रति अच्छी अभिवृति परिलक्षित होती है।

शिक्षा, समाज एवं राष्ट्र के इस संक्रान्ति काल में उच्च माध्यमिक स्तरों के शिक्षकों की तथा शिक्षकों के व्यक्तित्व में शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति की महत्त्वपूर्ण भूमिका जानने के पश्चात शोधकर्त्री के मन में यह जिज्ञासा उत्पन्न हुई कि नवनियुक्त व अनुभवी अध्यापकों के व्यक्तित्व में उपरोक्त चर के स्तर का पता लगाया जाये। वर्तमान समय में शिक्षकों की व्यवसायिक प्रतिबद्धता के प्रति कई तरह के सवाल उठ खड़े हो रहे हैं, समाचार पत्रों में आये दिन सरकारी स्कूलों पर ताले जड़ने, शिक्षकों के नदारद रहने, परीक्षा परिणाम में गिरावट, छात्रों के साथ मारपीट करने तथा बालिकाओं के साथ शिक्षा के मंदिर में दुराचार जैसी असहनीय घटनाएं प्रकाशित हो रही है, जो समाज में शिक्षकों की गरिमा व कर्त्तव्यबोध पर सवाल पैदा कर रही है। शिक्षकों के विरूद्ध उठते सवालों को हल करने हेतु उच्च माध्यमिक स्तर के सरकारी शिक्षकों के व्यक्तित्व में शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति के सही स्वरूप का पता लगाया जाना अत्यंत आवश्यक है, ताकि उनमें किसी भी प्रकार की विसंगति पाई जाने पर सही समय पर सही प्रयासों द्वारा सुधार किया जा सके।

शिक्षकों में शिक्षण व्यवसाय के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति का मौजूद होना अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। शिक्षण जैसे पवित्र व्यवसाय के प्रति यदि शिक्षक की अभिवृत्ति सकारात्मक नहीं है, तो वह मात्र धनोपार्जन के उद्देश्य से ही कार्य करके अपनी योग्यता का समुचित व सार्थक प्रयोग करने में सफल नहीं हो सकेगा, जो उसे धीरे - धीरे असफलता की ओर ले जायेगा। इससे ना सिर्फ शिक्षक की गरिमा का ह्रास होगा वरन् प्रत्यक्ष रूप से बालकों में निहित देश की अमूल्य बौद्धिक संपदा का भी नुकसान होगा, जिसकी भरपाई करना अत्यंत कठिन है। यह एक सामान्य तथ्य है, कि एक संपूर्ण रूपेण अभिवृत्ति शिक्षक अपने तथा संस्थान के उद्देश्यों की प्राप्ति में अन्य शिक्षकों से अधिक सफल होता है। शौकत हुसैन का मानना बिल्कुल सही है कि शिक्षण एक चुनौतीपूर्ण व्यवसाय है, तथा केवल वे शिक्षक राष्ट्र निर्माता के रूप में इस महत्त्वपूर्ण जिम्मेदारी को निभा सकते हैं, जो पूर्णतया इसके लिए तैयार है, तथा एक अच्छी व्यावसायिक अभिवृत्ति रखते हैं। अध्यापकों से यह आशा की जाती है कि वे इस क्षेत्र में आने वाली समस्याओं से निपटने हेतु सबसे सर्वोत्तम प्रयास एवं रणनीति अपनायेंगे। शिक्षण व्यवसाय एक स्पष्ट व निश्चित लक्ष्य, व्यवसाय के प्रति प्रेम तथा निश्चित रूप से इस व्यवसाय के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति की मांग करता है।

शिक्षण अभिवृत्ति एक अवधारणा है जो शिक्षक के स्वयं के सोचने, कार्य व अपने व्यवसाय के प्रति व्यवहार करने के तरीके से संबंधित है। शिक्षण के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति न केवल कार्य को आसान बनाती है, वरन् अधिक संतुष्टिजनक भी बनाती है। वर्तमान में ज्ञान-विज्ञान, तकनीकी, विभिन्न संचार उपकरणों, कम्प्यूटर, इन्टरनेट, एज्यूसेट आदि अत्याधुनिक उपकरणों के प्रयोग से शैक्षिक जगत में ज्ञान का विस्फोट हो रहा है। लेकिन शैक्षिक क्रांति के इस युग में भी शिक्षक की महत्ता वही है, जो पहले थी। शिक्षक आज भी छात्रों का विशेषकर माध्यमिक व उच्च माध्यमिक छात्रों का आदर्श (Role Modal) है, जिसके चुम्बकीय व्यक्तित्व व आदर्शों का अनुकरण करके विद्यार्थी 'सामाजिक अधिगम' की मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया को अपनाते हैं। चूंकि शिक्षक का व्यक्तित्व प्रभावी तथा आत्मविश्वास पूर्ण तभी बन सकता है, जब उसमें सकारात्मक अभिवृत्ति मौजूद हो। अतः शिक्षकों में शिक्षण व्यवसाय के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति होनी अत्यंत महत्त्वपूर्ण है, ताकि वे पूर्ण मनोयोग से अपनी योग्यता का प्रयोग कर बालकों में भी सकारात्मक दृष्टिकोण का विकास करने में सक्षम हो सकें। अतः यह शोधकार्य सरकारी शिक्षकों की अभिवृत्ति के वास्तविक स्वरूप का ज्ञान प्राप्त करने में महत्त्वपूर्ण सिद्ध हो सकेगा।

वर्तमान में बदलते परिवेश के आधार पर हमारी शिक्षा व्यवस्था एवं शिक्षकों को लेकर अनेक अपेक्षाएं हैं, तथा अपने चारों तरफ दृष्टि डालने पर यह ज्ञात होता है, कि वर्तमान की शैक्षिक माँगों के अनुरूप शिक्षा व्यवस्था परिपूर्ण दिखाई नही दे रही है। ऐसे में शिक्षकों की व्यवसायिक प्रतिबद्धता के कई तरह के सवाल उठ खड़े हो रहे हैं। अतः आज आवश्यकता शिक्षकों के सेवापूर्व व सेवारत प्रशिक्षण के क्षेत्र में ऐसे कार्यक्रम की है, जो वर्तमान परिस्थितियों के अनुरूप, सार्थक एवं नवीन ज्ञान के सभी आयामों से युक्त हो। इस दृष्टि से शिक्षा व शिक्षकों की कार्यविधियों, क्षमताओं, व शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्तियों पर पुनः चिंतन व पुनर्गठन करना होगा। तभी जाकर कई वर्षों से नियुक्त अर्थात अनुभवी शिक्षकों के साथ-साथ नवनियुक्त शिक्षक भी समाज की गतिशील आवश्यकताओं को पूर्ण कर पायेंगे। अतः इस दृष्टि से देखे तो यह शोधकार्य पर्याप्त औचित्यपूर्ण एवं सार्थक नजर आता है।

अध्ययन के उद्देश्यः– उच्च माध्यमिक विद्यालयों में नवनियुक्त एवं अनुभवी शिक्षकों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएँः– उच्च माध्यमिक विद्यालयों में नवनियुक्त एवं अनुभवी शिक्षकों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृति में सार्थक अन्तर नहीं है।

समस्या कथन में प्रयुक्त शब्दावली की व्याख्याः–

नवनियुक्त एवं अनुभवी शिक्षकः– जिन शिक्षकों की नियुक्ति को एक वर्ष अथवा इससे कम समय व्यतीत हुआ है, उन्हे नवनियुक्त शिक्षकों की श्रेणी में रखा गया है। इसी प्रकार जिन शिक्षकों की नियुक्ति को पांच वर्ष या इससे अधिक समय बीत चुका है अर्थात् जिन्हें शिक्षण कार्य का कम से कम पांच वर्ष का अनुभव प्राप्त हो चुका है, उन्हे अनुभवी शिक्षकों की श्रेणी में रखा गया है।

शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृतिः– शिक्षण व्यवसाय के प्रति व्यक्ति के विचारों व दृष्टिकोण को ही उसकी शिक्षण

व्यवसाय के प्रति अभिवृति की संज्ञा दी जा सकती है। रेमर्स, रूमेल व गेज – अभिवृत्ति अनुभव के द्वारा व्यवस्थित वह संवेगात्मक प्रवृत्ति है, जो किसी मनोवैज्ञानिक पदार्थ या वस्तु के प्रति सकारात्मक या नकारात्मक रूप से प्रक्रिया करती है। अभिवृत्तियां किसी व्यक्ति, वस्तु, संस्था अथवा स्थिति के प्रति किसी व्यक्ति विशेष के विचारों से अवगत कराती है। साधारण शब्दों में – अभिवृत्ति से हमारा तात्पर्य व्यक्ति के उस दृष्टिकोण से है, जो किसी व्यक्ति, वस्तु, संस्था अथवा स्थिति के प्रति किसी विशेष प्रकार के व्यवहार को इंगित करता है।

अध्ययन का सीमांकनः– इस शोधकार्य में आंकड़ों को एकत्रित करने हेतु शोधकर्त्री द्वारा राजस्थान राज्य के बीकानेर संभाग से कुल 100 उच्च माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालयों में नियुक्त अध्यापकों व अध्यापिकाओं (50 नवनियुक्त शिक्षकों व 50 अनुभवी शिक्षकों) का चयन न्यादर्श हेतु किया गया है।

शोध विधि :– प्रस्तुत शोध अध्ययन में सर्वेक्षण शोध विधि का प्रयोग किया गया है।

शोध उपकरण :–शोध उपकरण के रूप में उमे कलसुम द्वारा निर्मित– शिक्षण व्यवसाय के लिए अभिवृत्ति मापनी का प्रयोग किया गया है।

परिकल्पना – उच्च माध्यमिक विद्यालयों में नवनियुक्त एवं अनुभवी शिक्षकों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृति में सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका संख्या – 1.1: उच्च माध्यमिक विद्यालयों के नवनियुक्त एवं अनुभवी शिक्षकों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृति के विभिन्न आयामों के मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता की तुलना –

आयाम	न्यादर्श	संख्या (N)	मध्यमान (Mean)	मानक विचलन (S.D.)	क्रांतिक अनुपात मान (C.R)	सार्थकता स्तर	
						.05	.01
अकादमिक	नवनियुक्त शिक्षक	50	32.81	3.43	1.54	सार्थक अन्तर नहीं हैं।	
	अनुभवी शिक्षक	50	32.40	3.63			
प्रशासनिक	नवनियुक्त शिक्षक	50	19.41	2.50	0.11		
	अनुभवी शिक्षक	50	19.39	2.38			
सामाजिक व मनोवैज्ञानिक	नवनियुक्त शिक्षक	50	84.09	10.37	1.36		
	अनुभवी शिक्षक	50	83.01	10.65			
सहशैक्षिक	नवनियुक्त शिक्षक	50	15.29	2.37	0.60		
	अनुभवी शिक्षक	50	15.40	2.50			
आर्थिक	नवनियुक्त शिक्षक	50	19.10	2.69	0.24		
	अनुभवी शिक्षक	50	19.05	2.72			
सम्पूर्ण	नवनियुक्त शिक्षक	50	170.71	18.16	1.06		
	अनुभवी शिक्षक	50	169.25	18.15			

(df=N_1+N_2 &2=50+50&2=98)

उक्त तालिका संख्या – 4.2 में उच्च माध्यमिक विद्यालयों के नवनियुक्त एवं अनुभवी शिक्षकों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृति के विभिन्न आयामों (अकादमिक, प्रशासनिक, सामाजिक व मनोवैज्ञानिक, सहशैक्षिक, आर्थिक व सम्पूर्ण शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृति) के प्राप्तांकों के मध्यमान क्रमशः 32.81, 32.40; 19.41, 19.39; 84.09, 83.01; 15.29, 15.40; 19.10, 19.05 व 170.71, 169.25 तथा मानक विचलन क्रमशः 3.43, 3.63; 2.50, 2.38; 10.37, 10.65; 2.37, 2.50; 2.69, 2.72 व 18.16, 18.15 दिये गये हैं। गणना के आधार पर इन दोनों समूहों (नवनियुक्त तथा अनुभवी अध्यापकों) की शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृति के विभिन्न आयामों (अकादमिक, प्रशासनिक, सामाजिक व मनोवैज्ञानिक, सहशैक्षिक, आर्थिक व सम्पूर्ण शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृति) के क्रान्तिक अनुपात (CR) के मान क्रमशः 1.54, 0.11, 1.36, 0.60, 0.24 o 1.06 प्राप्त हुए हैं। जिनका विश्लेषण निम्न प्रकार है। तालिका में स्वतंत्रता के अंश 98 (df) क्रान्तिक अनुपात का मान 0.05 सार्थकता स्तर पर 1.98 एवं 0.01 सार्थकता स्तर पर 2.63 दिया गया है। नवनियुक्त तथा अनुभवी अध्यापकों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृति के विभिन्न आयामों (अकादमिक, प्रशासनिक, सामाजिक व मनोवैज्ञानिक, सहशैक्षिक, आर्थिक व सम्पूर्ण शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृति) के क्रान्तिक अनुपात (CR) के मान क्रमशः 1.54, 0.11, 1.36, 0.60, 0.24 o 1.06 प्राप्त हुए हैं। जो कि 0-05 o 0-01 दोनों सार्थकता स्तर पर तालिका मान से कम है, अतः निर्मित शून्य परिकल्पना को सार्थकता के दोनों स्तरों (0.05 o 0.01) पर स्वीकृत कर कहा जा सकता है कि उच्च माध्यमिक विद्यालयों के नवनियुक्त एवं अनुभवी शिक्षकों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृति के विभिन्न आयामों (अकादमिक, प्रशासनिक, सामाजिक व मनोवैज्ञानिक, सहशैक्षिक, आर्थिक व सम्पूर्ण शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृति) में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

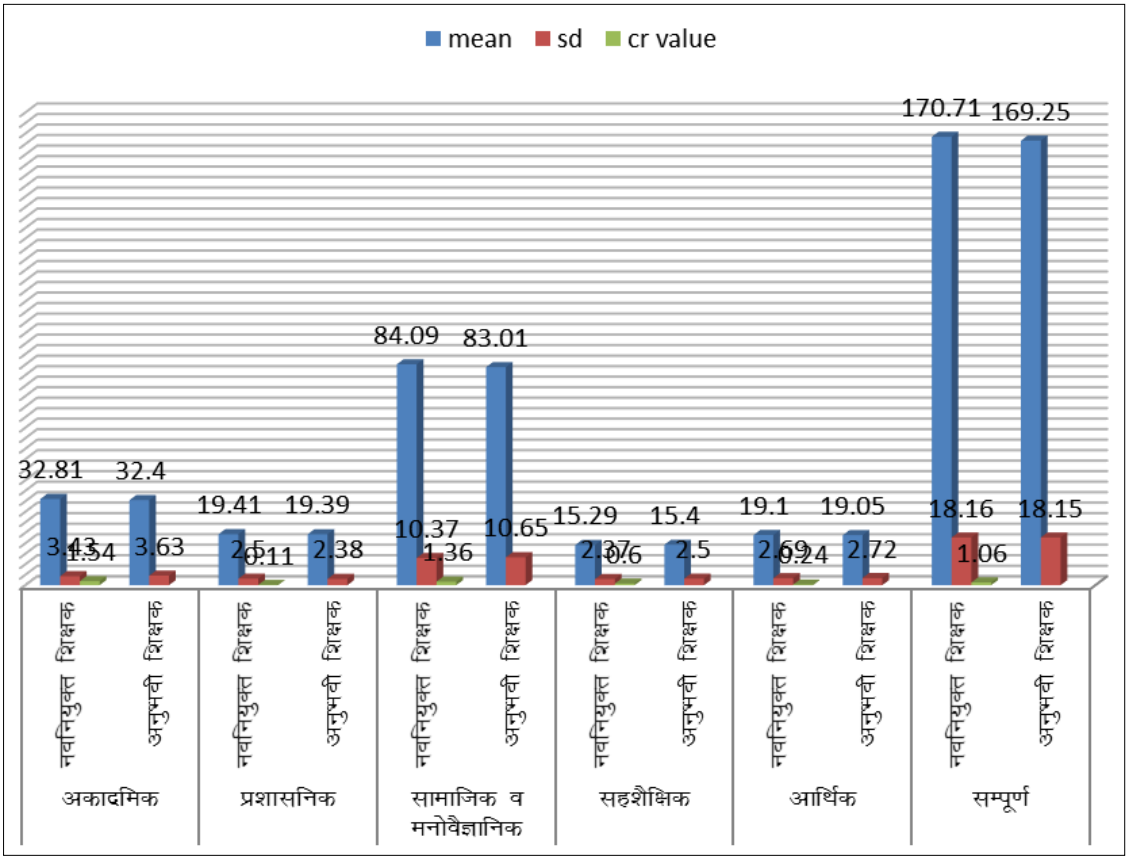

उच्च माध्यमिक विद्यालयों के नवनियुक्त एवं अनुभवी शिक्षकों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृति के विभिन्न आयामों के मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता की तुलना का आरेखिय प्रदर्शन।

निष्कर्ष –

उच्च माध्यमिक विद्यालयों में नवनियुक्त एवं अनुभवी शिक्षकों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति में सांख्यिकीय दृष्टि से कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है। किन्तु मध्यमानों के आधार पर नवनियुक्त शिक्षकों में अनुभवी शिक्षकों की तुलना में शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति आंशिक रूप से अधिक पायी गयी है। शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति के सभी पाँच आयामों तथा उनके सम्पूर्ण योग के मध्यमानों के आधार पर कहा जा सकता है, कि नवनियुक्त शिक्षकों में शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति अनुभवी शिक्षकों की तुलना में अधिक पायी गयी है।

शैक्षिक उपादेयता :– अध्ययन से ज्ञात हुआ है कि जहाँ अनुभवी अध्यापकों में शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति का स्तर कम पाया गया। शोधकर्त्रा द्वारा प्रदत्त संकलन हेतु किये गये सर्वेक्षण में प्रत्यक्ष अनुभवों द्वारा इस समस्या का कारण यह अनुभूत किया गया कि अनुभवी शिक्षक योग्य होने पर भी कार्य के प्रति वह ऊर्जा व उत्साह प्रदर्शित नहीं करते जो उन्हें करना चाहिए। उनमें कार्यों से बचने तथा अपने कार्य को अधीनस्थों पर डालने की प्रवृति देखी गयी। उनमें कम्प्युटर, सूचना व संचार तकनीकी, शैक्षिक जगत के नवाचारों के ज्ञान व प्रयोग को अपने लिए कम तथा नवीन शिक्षकों के लिए अधिक महत्वपूर्ण मानने की प्रवृति देखी गई। यदि अनुभवी शिक्षकों की अभिवृत्ति को सकारात्मक बनाया जावे तथा उनमें काम के प्रति वही ऊर्जा, उत्साह व उमंग जगायी जाये जो नवीन शिक्षकों में है, तो न केवल उनकी अभिवृत्ति में सकारात्मक वृद्धि होगी, साथ ही साथ ही वे स्वयं ही कम्प्युटर, सूचना व संचार तकनीकी व अन्य नवाचारों के बारे में जानने तथा प्रयोग करने के इच्छुक होंगे जो उनकी शिक्षण ायोग्यता को भी श्रेष्ठ बनाने में सहयोग करेगा। शोधकर्त्री द्वारा किये गये इस अध्ययन के परिणाम शिक्षाशास्त्रियों को वर्तमान में प्रचलित सेवारत्त व सेवापूर्ण प्रशिक्षण कार्यक्रम में वांछित संसोधन करने हेतु मार्ग प्रशस्त करेंगे।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. त्रिपाठी श्री राजमणी, “शिक्षण कला” (2009) राधा पब्लिकेशन पृष्ठ 200.
2. मेहता, डी. डी.– “भारत में शिक्षा का विकास” टंडन पब्लिकेशन, बुक्स मार्केट, लुधियाना पृष्ठ 105&120
3. पारीक, महेश कुमार, “शिक्षा दर्शन व उभरता भारतीय समाज” पृ.स. 154.
4. भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका–वर्ष–27, अंक–1, जन.–जून 2008, पृष्ठ सं. 21.
5. भार्गव, डॉ. महेश, ‘‘आधुनिक मनोवैज्ञानिक परीक्षण एवं मापन (2007), एच.पी.भार्गव बुक हाऊस, आगरा, पृ. स. 262.
6. अस्थाना, डॉ. बिपिन एवं श्री वास्तव, डॉ. विजया (2011), “षैक्षिक अनुसंधान एवं सांख्यिकी”, अग्रवाल पब्लिकेषन्स, आगरा। पृ.सं.440.